प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा तथा पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का अध्ययन

श्रीमति भावना गीते
व्याख्याता
विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल
Email - bhavanagitey@gmail.com

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा तथा पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का अध्ययन करना है। शोध के लिए 10 ग्रामीण व 10 शहरी सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के 100 अध्यापकों का चयन किया गया था। इस अध्ययन में अवलोकन व साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है एवं टी परीक्षण के द्वारा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों का अध्ययन किया गया तब यह निष्कर्ष पाया गया कि दोनों में सार्थक अंतर है।

मुख्य विन्दुः पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण जागरूकता

प्रस्तावना– प्रकृति के अंगों उपांगों को देवता स्वरूप मानने की परम्परा वैदिक काल से हो रही है। सूर्य, नदी, पर्वत, आकाश, ऊषा, वरूण आदि को सम्मान देते हुए पूजनीय माना गया है। प्रत्येक प्राणी एवं मनुष्य पर्यावरण का ही एक अंश है। इसके अतिरिक्त वन, वनस्पति, पेड़–पौधे भी मानव अस्तित्व के लिए विशेष सहायक होते हैं। इन सबके सामूहिक सम्मेलन से ही पर्यावरण का सृजन होता है। किन्तु वर्तमान समय में पर्यावरण का निर्माण करने वाले कारकों में स्थापित संतुलन छिन्न–भिन्न हो जाने के कारण पर्यावरण सम्बन्धी चिंताजनक स्थिति उत्पन्न हो गई है। पर्यावरण स्थिति के प्रकरण में मनुष्य की अदूरदर्शिता, अविवेक, अज्ञानता, अशिक्षा एवं भौतिकवादी प्रवृत्ति बहुत हद तक जिम्मेदार है। यदि उसे समय रहते पर्यावरण से उत्पन्न होने वाली समस्याएं इतनी भयावह, दुर्भिक्ष एवं असमाधानिक हो जाएंगी कि कदाचित प्राणीजगत एवं मानव जगत का अस्तित्व ही समाप्त हो जाए। ऐसी ही विचारधारा को दृष्टि में रखकर पर्यावरण के प्रति चेतना एवं जन जागृति लाने हेतु पर्यावरण शिक्षा नामक एक अभिनव प्रवृत्ति का अभ्युदय शिक्षाविदों द्वारा किया गया।

समस्या कथन – प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा तथा पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा में अंतर ज्ञात करना।
2. विज्ञान व अन्य विषयों के अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा का अध्ययन करना।

न्यादर्श – इसके अंतर्गत भोपाल शहर के 10 ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों तथा 10 शहरी प्राथमिक विद्यालयों के 100 अध्यापकों को सम्मिलित किया गया।

शोध विधि– इस अध्ययन में अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया।

शोध कार्य में प्रयुक्त चर

1. स्वतंत्र चर – (अ) विषय (ब) क्षेत्र– ग्रामीण/शहरी
2. आश्रित चर – पर्यावरण शिक्षा जागरूकता

शोध कार्य में प्रयुक्त साँख्यिकी– इस अध्ययन में मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी परीक्षण का उपयोग किया गया।

परिकल्पना

1. ग्रामीण तथा शहरी अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	टी	डी एफ
पर्यावरण शिक्षा जागरूकता	ग्रामीण	50	52.76	5.438	2.837	98
	शहरी	50	57.02	9.119		

2. विज्ञान व अन्य विषयों के अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	विषयक पृष्ठभूमि	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	टी	डी एफ
पर्यावरण	विज्ञान	26	60.42	8.315	4.463	79

जागरूकता	अन्य	55	53.15	6.057		

निष्कर्ष – ग्रामीण तथा शहरी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी अध्यापक पर्यावरण शिक्षा तथा पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक पाए गए। इसका कारण उनका अधिक शिक्षित होना हो सकता है। विज्ञान व अन्य विषयों के के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया। विज्ञान अध्यापक पर्यावरण शिक्षा तथा पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक पाए गए। इसका कारण उनका पर्यावरणीय ज्ञान व प्रकृति के महत्व का ज्ञान होना हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कौल लोकेश शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि.

भटनागर ए.बी. (2004) विज्ञान शिक्षण, मेरठ

रघुवंशी अरूण (1990) पर्यावरण तथा प्रदूषण, भोपाल